भूत का खेत

- अन्नाभाऊ साठे

- अनुवादकः डॉ. हसन युनुस पठान

एक पहाड़ की तलहटी में, ऐन मैदान पर बबूल और नीम के टेढ़े-मेढ़े पेड़ खड़े थे। उन पेड़ों के झुंड में सेवरवाड़ी किसी वनवासी की तरह दिखाई दे रही थी।

सेवरवाड़ी से डेढ़ मील दूर बंडू सेवरा का खेत था। बिल्कुल घने पेड़ों की छाया में वह खेत गुलज़ार था। भरपूर पानी वाला बावड़ी, जहाँ नारियल के दो ऊँचे पेड़ किसी जुनून की तरह आसमान में झूम रहे थे। उस खेत की फसल में गज़ब का ज़ोर था। जाँघ जितना मोटा गन्ना, कमर तक ऊँची हल्दी, वैसी ही मिर्च, और मक्का–मानो इंसान भी बो दिया जाए तो उग आए, ऐसा वह खेत था।

हाथी की तरह हृष्ट-पुष्ट बारह बैल, दुधारू गाय-भैंसें, भेड़-बकरियां और मुर्गियां इन सब से वहाँ का माहौल गुंजायमान था।

चार बेटे, चार बहुएं, पोते-पोतियाँ और काम करने वाले मज़दूर ऐसा विशाल परिवार लेकर बंडू सेवरा उस खेत में पक्के पत्थरों की हवेली बनाकर गृहस्थी कर रहा था। उसके खेत में मानो अमरावती उतर आई थी।

बंडू सेवरा कब जन्मा और कब मरेगा, इसकी सेवरवाड़ी के कई लोगों को चिंता सता रही थी। क्योंकि बंडू की उम्र का एक भी इंसान ज़िंदा नहीं बचा था। इसके उलट, उसके बाद पैदा होकर भी बुढ़ापे का आखिरी पड़ाव देखकर कई लोग भगवान को प्यारे हो चुके थे। उनकी हड्डियाँ मिट्टी में मिल चुकी थीं, किसी का धुआँ छप्पर से निकल चुका था।

लेकिन बंडू सेवरा तंदुरुस्त और रोबदार था। उसका चौड़ा चेहरा झुर्रियों से ढका था, पर उसकी आँखें तेज़ थीं। सिर के बाल, भौहें और घनी मूंछें... सब कुछ पककर रेशम की तरह चमक रहा था। उसका ऊँचा शरीर एकदम सीधा था। सिर पर ज़री का साफ़ा (पगड़ी), बदन पर कुर्ता और घुटनों तक साफ़-सुथरी धोती–ऐसा उसका ठाट था। वह मूसल जितनी मोटी लाठी हाथ में लेकर शांति से चलता रहता।

बंडू की उम्र और खेत का वह वैभव देखकर लोग कहते, 'बंडू सेवरा इंसान नहीं बल्कि भूत है' और उसके खेत को 'भूतों का खेत' कहते थे।

गाँव में बंडू के बारे में कई कहानियाँ और किंवदंतियाँ मशहूर थीं, जो ज़ुबान-दर-ज़ुबान फैल चुकी थीं। खेत दिखते ही लोगों को भूत की याद आ जाती और उनके दिमाग में भूत तांडव करने लगता।

कुछ बातूनी लोग दूसरों को बिठाकर एक कहानी सुनाते:

बहुत समय पहले बंडू सेवरा गरीब था। वह अपने खेत में छप्पर की झोपड़ी बनाकर रहता था। वह और उसकी पत्नी दूसरों के यहाँ मज़दूरी करके पेट पालते थे।

एक दिन बंडू लोगों की घास काट रहा था। उसकी पत्नी झोपड़ी में रोटी बना रही थी। सर्दी के दिन थे, ओस से घास भीगी हुई थी। बंडू की हंसिया लगातार चल रही थी। उसने घास की एक मूठ पकड़ी और हंसिया चलाई, तो उस मुट्ठी में एक असली नाग खिंच आया। मुट्ठी में दबे साँप ने बंडू को ज़ोर से डस लिया। साँप के काटते ही बंडू घबरा गया, उसने चीख-पुकार मचाई। लोग दौड़े आए, उसकी पत्नी भी छाती पीटती हुई पहुँची।

कुछ लोगों ने दौड़-धूप की, दवाइयाँ लाए, जड़ी-बूटियाँ पीसकर पिलाईं, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। बंडू ने आँखें मूँद लीं।

'मुझे मेरे खेत की मेढ़ पर दफना देना!' मरने से पहले उसने यही विनती की। फिर लोगों ने मेढ़ पर गड्ढा खोदा और बंडू की लाश को उसमें रख दिया।

और मिट्टी डालने से ठीक पहले बंडू ने आँखें खोल दीं। यह देखकर लोग हैरान रह गए। मरा हुआ बंडू सेवरा उठ बैठा। चारों तरफ़ शोर मच गया। बंडू कब्र में ज़िंदा हो गया, यह चमत्कार हो गया। और कुछ होशियार लोगों ने इस चमत्कार का यह अर्थ निकाला, 'बंडू तो मर चुका था, लेकिन उसी वक्त भूत आया और बंडू की लाश में घुस गया!'

बंडू सेवरा फिर से गृहस्थी चलाने लगा, लेकिन लोगों ने उसे भूतों में गिनना शुरू कर दिया था।

आगे चलकर लोगों ने कई चमत्कार देखे। बंडू के चार बेटे हुए, वे समझदार और कमाने लायक बने। उसने वह पूरा खेत खरीद लिया, बावड़ी खुदवाया, पत्थरों का बड़ी हवेली बना ली; और तब से इतने साल बीत जाने पर भी वह मर ही नहीं रहा था!

यह सब भूत का ही चमत्कार है और उस खेत में भूतों का कुनबा गृहस्थी बसाकर रह रहा है, ऐसी कई लोगों ने अपनी धारणा बना ली थी; और वही धारणा वे दूसरों के मन में भी ज़बरदस्ती बैठा रहे थे।

उस खेत में होने वाले चमत्कारों को देखने के लिए गाँव के लोग ताक लगाए बैठे रहते थे।

एक रात को आधी रात में पानी निकालने वाली रहट का पहिया बजने लगा। सेवरवाड़ी चौंककर जाग उठी। बंडू के खेत में आधी रात को बैल जुते देखकर लोगों को फिर यकीन हो गया कि यह काम सिर्फ़ भूत ही कर सकता है।

एक बार ऐसी ही आधी रात का समय था। चारों तरफ़ घना अँधेरा छाया था। सेवरवाड़ी सन्नाटे में पड़ी थी। घर-घर लोग खर्राटे ले रहे थे, गहरी नींद में सोए थे। अचानक नाना खोत की नींद खुली और वह दरवाज़े पर आया। तभी उसकी नज़र चट से भूत के खेत की तरफ़ गई। वहाँ उसने जो देखा, उसे देखकर वह दंग रह गया।

उस खेत में कई मशालें जल रही थीं। उग्र रोशनी से खेत जगमगा उठा था। कई लपटों का एक बड़ा अलाव बनकर पेड़-पौधे साफ़ दिखाई दे रहे थे। जैसे बहुत से लोग बातें कर रहे हों, वैसा शोर बढ़ता जा रहा था। नाना खोत ने एक पल सोचा कि भूतों का यह कारनामा पूरे गाँव को दिखाना चाहिए। इसलिए वह गाँव वालों को जगाने लगा। 'अरे ओ, उठो! भूत के खेत

में मेला लगा है देखो,' ऐसा कहते हुए उसने पूरे गाँव का चक्कर लगाकर एक-एक इंसान को जगा दिया। पूरा गाँव बिस्तर छोड़कर दरवाज़े पर आ गया और वह अनहोना चमत्कार देखने लगा। एक बूढ़ा दबी ज़ुबान में बोला, '

'अरे, चल क्या रहा है उस खेत में?'

'क्या मतलब?' एक गाँव वाला सामने देखते हुए बोला, 'दुनिया भर के भूत बंडू सेवरा से मिलने आए होंगे, और क्या?'

'रुको रे!' नाना खोत दोनों हाथों से लोगों को चुप कराते हुए बोला, 'मैं जाकर देखकर आता हूँ।' उसने आसपास देखा, उसका नटखट तुक्या उसे दिखाई नहीं दिया।

गाँव के जवान लड़के बोले,

'हम भी आते हैं, चलो...'

नाना खोत और वे लड़के बंडू के खेत की तरफ अँधेरे में भागे। लेकिन खेत तक कोई भी नहीं गया। दूर से ही देखकर लौट आए, बिल्कुल भागते हुए ही आए। सारे गाँव ने उत्सुक होकर एक ही सवाल किया,

'अरे, भूत क्या कर रहे हैं?'

'कुछ नहीं', नाना हाँफते हुए बोला, 'सारे भूत जमा होकर हल चला रहे हैं। अपने-अपने बैल लेकर बहुत सारे भूत आए हैं!!...'

वह भयानक खबर सुनकर लोग डर गए और धीरे-धीरे खिसकने लगे। थोड़ी ही देर में पूरा गाँव बिस्तरों पर लेट गया। नाना खोत घर आया, तब उसका दस साल का तुक्या बिस्तर पर नहीं था। नाना घबराकर तुक्या को ढूंढने के लिए भागने ही वाला था कि तभी तुक्या दरवाज़े के सामने नीम के पेड़ पर चढ़कर भूतों का खेत देख रहा था। वह बाप से बोला,

'ए, आबा, मैं यहाँ हूँ ना! मैं भूतों का हल देख रहा हूँ!!'

नाना को उस पर गुस्सा आया, लेकिन वह बच्चा पेड़ की चोटी पर था इसलिए बच गया। नाना ने गाली बकते हुए डांटा,

'भड़वे, नीचे आ।'

नाना उम्र में जवान था, पुराना पहलवान। अब कुश्ती छोड़कर गृहस्थी चला रहा था। ताकतवर और साहसी के रूप में गाँव में उसका नाम था। घर में सांप निकल आए, कुत्ता बावला हो जाए, गाड़ी कीचड़ में फँस जाए तो नाना पहलवान बिना चूके सबसे आगे होता था।

तुक्या के नीचे आते ही उसके सिर पर एक मुक्का पड़ा और उसकी माँ ने उसे गोद में उठा लिया। 'बिल्कुल अपने बाप पर गया है!' ऐसा कहते हुए वह तुक्या को घर के अंदर ले गई।

नाना का तुक्या केवल दस साल का था, लेकिन उसकी शैतानियों का गाँव में कोई जवाब नहीं था। खड़ी चोटी, गोल चेहरा, पैनी आँखें, चपटी नाक ऐसा उसका हुलिया था। बोलने में वह बेहद चतुर था और भैंस के गले में बँधे काठ के ढोल की तरह, जिधर बाप जाता उधर ही वह चला जाता। लेकिन नाना की एक न चलती थी। तुक्या बिल्कुल परछाईं की तरह बाप के पीछे

घूमता रहता था। कदम-कदम पर वह झगड़ा मोल लेता था। उस बच्चे की लीलाओं से नाना तंग आ चुका था।

अपने-अपने घरों में लोग जागे हुए थे, भूतों की कहानियाँ सुना रहे थे। नाना दरवाज़े पर बैठकर चिलम पी रहा था। इतने में भुजा कैकाडी आया। उसे भी तंबाकू की तलब लगी थी। उसने भी अपनी चिलम भरी। पौष के महीने की ठंड चुभ रही थी। शरीर पर लपटा फटा-पुराना कपड़ा ठीक करते हुए भुजा ने कश खींचा और सारा धुआँ निगलकर सवाल किया–

'नाना, भूत हल चलाने लगे हैं, अब आगे क्या होगा इस दुनिया का?'

'अरे भाई, यह कलयुग है।' नाना गंभीर आवाज़ में बोला, 'अब सारे भूत गाँव में घुसकर खेती-बाड़ी करने लगेंगे और हम लोगों को भूत बनकर दर-दर भटकना पड़ेगा चिल्लाते हुए–'

'सच में भाई!' कैकाडी सिर हिलाते हुए बोला, 'अनर्थ है अनर्थ! पर यह बंडू सेवरा वाला मामला सच्चा है क्या?'

'अरे, वह मामला सच्चा है।' नाना बोला, 'बंडू सेवरा को मरे हुए बहुत दिन नहीं, कई साल हो गए। वह कब्र में ज़िंदा हो गया। उसकी वजह यह थी कि उसकी लाश में भूत घुस गया! यानी, अब जो है वह बंडू सेवरा नहीं बल्कि भूत है!'

'फिर तो किसी दिन यह भूत पूरे सेवरवाड़ी को तहस-नहस कर डालेगा!' कैकाडी डरकर बोला। तब उसे दिलासा देते हुए नाना ने कहा,

'ऐसा-वैसा कुछ नहीं होगा! वह भूत अब इंसान बन चुका है, इसलिए वह गाँव को हाथ नहीं लगाएगा।'

'यानी चलो राहत की बात है,' भुजा ने चैन की सांस ली और सोने के लिए चला गया। तुक्या जागा हुआ ही था, लेटे-लेटे सब सुन रहा था। कैकाडी के जाते ही वह बोला,

'आबा, भूत गरीब होता है ना?'

तुक्या की बात सुनकर नाना चौंक गया, पल भर में उसे तुक्या पर गुस्सा आ गया। मन हुआ कि एक जमा दे, लेकिन उसने गुस्सा दबा लिया। मन ही मन कुढ़ते हुए वह सोने के लिए लेट गया।

वह फागुन का महीना था। सूरज ढल रहा था और ठीक उसी समय चाँद उग रहा था। पूर्णिमा की रात खिल रही थी। खेतों में कोल्हू (गुड़ बनाने के कारखाने) शुरू हो चुके थे। लकड़ी के कोल्हू गूँज रहे थे। खेत-खेत में गन्ने के ढेर से गुड़ की भेलियाँ तैयार हो रही थीं। खेतों में मीठी महक छाई हुई थी।

नाना खोत गन्ने के पत्तों का गठ्ठा सिर पर उठाकर गाँव की ओर निकला था। उसका तुक्या लगातार गन्ना मुँह में दबाकर चबाते हुए पीछे-पीछे भाग रहा था। बीच-बीच में रुककर अपनी लंगोटी ठीक कर रहा था।

उसी समय आड़े रास्ते से भुजा कैकाडी आया और नाना के साथ चलने लगा। चलते-चलते भुजा बोला,

'आपका यह लड़का बड़ा शैतान है, इसे स्कूल ही भेज दो। मुआ भूत की तरह घूमता रहता है।'

'अरे, रहने दो, वह बात मत करो!' नाना बोला, 'यह लड़का मास्टर से पेशाब करवा देगा और पूछेगा कि 'पेशाब क्यों किया' कहकर हगा देगा। यह तो छटा हुआ शैतान है।'

बातें करते-करते वे गाँव के मुहाने पर आ गए। उसी समय गाँव की तरफ से बंडू सेवरा आया। उसे देखकर नाना और भुजा चौंक गए। नाना ने रुककर राम-राम किया। बंडू बोला,

'आज खेत में दावत है। आज से मेरा कोल्हू चालू हो रहा है। पाँच बकरे काटे हैं, सो खाने आना। पूरे गाँव को न्योता देकर आया हूँ,' ऐसा कहकर सेवरा कैकाडी की तरफ मुड़कर बोला, 'ए कैकाडी, तू भी आना, कड़ान खाने।'

कैकाडी पीछे हटा और बस सिर हिलाने लगा। सेवरा खेत की तरफ चला गया। तब कैकाडी ने धीमी आवाज़ में कहा,

'सच में भाई, यह तो भूत ही है! आपने राम-राम किया तब सेवरा ने राम का नाम नहीं लिया।'

'बिल्कुल सही!' नाना ने कैकाडी की तारीफ करते हुए कहा, 'भुजा, तेरे पास दिमाग है माना! अरे, मैंने जान-बूझकर राम-राम किया था। पर भूत भी बड़ा चालाक निकला, उसने राम का नाम नहीं लिया।'

'लेकिन आबा, यह भूत तो गरीब है।' तुक्या से चुप नहीं रहा गया। नाना चिढ़ गया। उसने तुक्या के मुँढे हुए सिर पर एक ज़ोरदार घूँसा मारा, जिससे उसके मुँह से गन्ने की चबाई हुई फुसकी नीचे गिर पड़ी।

खाने का वक्त हो चुका था। चंद्रप्रकाश से पूरी कुदरत नहा उठी थी, दूध जैसी चाँदनी छलक रही थी। सेवरवाड़ी के खपरैल वाले घर चाँदी के मकानों जैसे चमक रहे थे। भूता के खेत में दावत खाने जाएँ या न जाएँ, यह भयंकर असमंजस सेवरवाड़ी के सामने खड़ा था। सबकी आस नाना पर ही टिकी थी। नाना आएगा तो हम भी आएँगे, ऐसा सब कह रहे थे।

लेकिन नाना का तुक्या नंगा पुंगा दूर खड़ा होकर सब सुन रहा था। इस वजह से नाना टालमटोल कर रहा था। 'हम निकले कि यह तुक्या पीछे लग जाएगा', इस बात का डर नाना को सता रहा था।

सारे जवान मर्द एक नीम के पेड़ के नीचे बैठकर सोच-विचार कर रहे थे। नाना बोला,

'मैं तो नहीं आ सकता भाई, तुम लोग जाओ,' और पास खड़े एक गाँव वाले के कान में फुसफुसाया, 'अरे, हमारा तुक्या अभी सोया नहीं है। भूत की तरह खड़ा है। तुम लोग आगे बढ़ो, तुक्या के सोते ही मैं आता हूँ।'

'चलो-चलो, नाना नहीं आया तो न आए। अपन तो चलते हैं। चलो।'

सबने एक-दूसरे के कान में फुसफुसाहट की और बैठक खत्म हो गई। एक जना नाना से चुपके से बोला,

'नाना, जल्दी आना। दावत खत्म होने के बाद मत आना।'

काफी लोग निकल गए और नाना कुढ़ते हुए बिस्तर पर लेट गया। तुक्या ने बाप के सोने की पूरी तसल्ली की, और उसके बाद ही लेटा। नाना को उस लड़के पर बहुत गुस्सा आ रहा था, पर करता भी क्या? एक ही था, वह भी टेढ़ा! मारो तो तुक्या की माँ मारने नहीं देती थी। नाना का बस मन ही मन घुटकर रह जाता था।

'बाप तो जा नहीं रहा' यह सोचकर तुक्या बेफिक्र हो गया।

'पर यह लड़का गले का ढोल बन गया है। मैं कहीं जा नहीं सकता। यह बच्चा नहीं, भूत है। मारो तो मर जाएगा, न मारो तो पीछे से टलता नहीं' यह सोचते हुए नाना पड़ा रहा। वह बार-बार टोह ले रहा था कि तुक्या सोया या नहीं।

काफी देर बाद तुक्या खर्राटे लेने लगा। नाना को खुशी हुई। उसने तुक्या पर चादर ओढ़ाई और उठ खड़ा हुआ। अपनी पत्नी को जगाकर बोला,

'मैं दावत खाने जा रहा हूँ।'

'जाओ, तुका सो गया है,' पत्नी ने नाना से कहा।

नाना लाठी और कंबली लेकर बाहर निकला। गाँव के लोग काफी आगे निकल चुके थे, इसलिए उसने छोटा रास्ता पकड़ा। वह मैदान के रास्ते तेज़ी से निकलने लगा। उस समय आसमान में राख के रंग के बादलों की भीड़ लगी थी। पूरा चाँद उन बादलों की परतों को चीरता हुआ तेज़ी से भाग रहा था। वह छुपते-छुपाते रास्ता तय कर रहा था। चाँद बादलों में छुपता तो ज़मीन पर अँधेरा छा जाता, और बाहर निकलता तो रोशनी बिखेर देता। कुदरत पर मानो चाँदी की परत चढ़ जाती। नाना अपने कदमों की रफ्तार बढ़ा रहा था। वह मैदान में दौड़ता हुआ जा रहा था और पल-पल अपनी चाल तेज करता जा रहा था।

चलते-चलते उसके दिमाग में भूत का ख्याल आया और धीरे-धीरे बढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में उस विचार ने अक्राल-विक्राल रूप धारण कर लिया। भूत अनंतरूपी होता है! वह मनचाहा रूप धरकर इंसान को मार डालता है। कभी सांप बन जाता है, कभी कुत्ता, तो कभी स्त्री। कोई पहलवान मरकर अगर भूत बन जाए, तो वह इंसान को रोककर कुश्ती लड़ता है। अगर कोई स्त्री हो, तो वह पुरुष को रोककर हैरान-परेशान कर देती है। कुल मिलाकर इंसान भूत के आगे लाचार साबित होता है और मारा जाता है...

ऐसा विचार करते हुए नाना निकल पड़ा था। एकाएक वह रुक गया। उसने धीरे से पीछे मुड़कर देखा। पीछे की ढलान के शिखर पर एक कुत्ता दिखाई दिया। वह कान खड़े करके नाना की तरफ देखता हुआ खड़ा था। 'यह कुत्ता किसका है?' नाना ने खुद से सवाल पूछा और 'होगा गाँव का ही!' ऐसा खुद ही जवाब दे दिया। फिर उसने आसपास देखा। चारों ओर बबूल और बेर के पेड़-झाड़ सिकुड़कर बैठे हुए थे। ऐसा आभास हो रहा था जैसे वे घात लगाकर बैठे हों। नाना मन ही मन डर गया। वह हर झाड़ी को गौर से देखने लगा। रोज़ की झाड़ियाँ आज उसे अजीब लग रही थीं।

'मैं तो बेकार ही डर गए,' ऐसा कहकर वह हँस दिया। इतने में ही उसके पैरों के नीचे से कुछ सरसराकर झाड़ी में चला गया। इस पर वह फिर चौंक उठा। अनजाने में ही डर गया और 'मैं ऐसे क्यों डर रहा हूँ?' सोचकर खुद पर ही गुस्सा हो गया।

सृष्टि अँधेरे से उजाले में आ-जा रही थी। मैदान की टेढ़ी-मेढ़ी बबूल की झाड़ियाँ माहौल को ओर भयानक बना रही थीं।

नाना ने खड़े होकर पीछे देखा, तो वह कुत्ते की आकृति खड़ी थी। लगभग एक फर्लांग दूर उस कुत्ते का चेहरा भाँपने की कोशिश नाना करने लगा। लंबे-लंबे कान, तेज आँखें, चौड़ा जबड़ा–ऐसा भयावह कुत्ता नाना को दिखाई देने लगा, तो वह सहम गया। यह कुत्ता गाँव का नहीं बल्कि भूत ही होना चाहिए ऐसा सोचकर उसने कदम बढ़ा दिए। वह तेजी से निकल पड़ा। भूत के ख्यालों ने उसे घेर लिया। वह उस डर को झटक देने की कोशिश करने लगा। चाँद बादलों से बाहर आया और नाना ने फिर मुड़कर देखा, तब उसे वह कुत्ता दिखाई नहीं दिया। उसकी जगह एक मानवाकृति दिखाई दी। तभी चाँद फिर बादलों में छिप गया और अँधेरा छा गया, तथा उस अँधेरे में वह इंसान की छोटी-सी आकृति नाना को बहुत ऊँची लगने लगी। अब तो नाना के प्राण ही सूख गए। और उसने भागने का फैसला किया। वह तुरंत घूमकर भूतों के खेत की तरफ भागने लगा। भागते-भागते उसने पीछे देखा, तो उसके ध्यान में आया कि पीछे वाला भूत भी भाग रहा है। और उसने और भी दुम दबाकर दौड़ लगा दी।

मैदान खत्म हो चुका था और नाना एक पगडंडी में घुसकर भाग रहा था। वह पगडंडी दोनों तरफ के पेड़ों से ढकी हुई थी, इसलिए वहाँ अँधेरा छाया हुआ था। लेकिन जहाँ पेड़ों के पत्ते विरले थे, वहाँ से उतना ही प्रकाश पगडंडी में छनकर आ रहा था। उस पगडंडी में ऐसा दृश्य दिख रहा था मानो अँधेरा और उजाला एक ही जगह पीठ से पीठ सटाकर बैठे हों।

पगडंडी में नाना को थोड़ा ढाढ़स बँधा। वह अँधेरे में छिपकर देखने लगा। जो कुत्ता था, वह इंसान कैसे बन गया? मेरे भागने से भी क्या होगा? भूत तो मुझे ढूँढ ही लेगा! ऐसा कहते हुए वह फिर उठ खड़ा हुआ। उसने अपने रास्ते पर वापस देखा, तो पेड़ों के पत्तों से छनकर आती रोशनी में वह आकृति आगे-आगे आती दिखाई दे रही थी। वह तेजी से चल रही थी। अँधेरे से उजाले में और उजाले से अँधेरे में प्रवेश कर रही थी। उसके पैरों तले पगडंडी की रेत में सरसराहट हो रही थी। नाना भयभीत होकर आगे बढ़ रहा था और वह आकृति भी उसी की रफ्तार से भाग रही थी। पगडंडी में भागमभाग शुरू थी।

नाना पसीने से तर-बतर हो गया था। शरीर के सारे कपड़े भीग चुके थे। सिर की पगड़ी बिखर गई थी। हाथ की लाठी इतनी कसकर पकड़ी थी कि उँगलियाँ अकड़ गई थीं। उसकी साँस फूल रही थी। पगडंडी खत्म नहीं हो रही थी और भूत का खेत पास आ नहीं रहा था।

भूत का खेत पास आते ही नाना में हिम्मत आई। और वह खुद पर गुस्सा हुआ। 'एक दनका मारकर भागना है', यह सोचकर वह रुक गया। उसने टटोलकर एक पत्थर उठाया और घात लगाकर देखने लगा।

उस गहरे अँधेरे में वह आकृति दिखाई नहीं दे रही थी। लेकिन रेत में खड़खड़ करती उसकी आहट नाना की तरफ ही आ रही थी। नाना एक पेड़ के तने के पीछे पत्थर लेकर बैठा था। 'एक जमाकर भाग निकलना है' यह निश्चय पक्का हो गया और वह आकृति घबराकर भागती हुई आई। नाना ने अँधेरे में अंदाज़ा लगाया, ज़ोर से पत्थर मारा और उतनी ही तेज़ी से वहाँ से भाग निकला। एक भयानक चीख उसकी पीठ के पीछे टकराई।

नाना जब भूत के खेत पहुँचा, तो उसे बड़ी राहत मिली। मानो कुछ हुआ ही न हो, ऐसा नाटक करते हुए वह हँसा। उसने खाना खाया और सभी लोग सेवरवाड़ी के लिए निकल पड़े। नाना से रहा नहीं गया, वह बोला,

'अरे भाई, मुझे रास्ते में भूत ने पकड़ लिया था!'

'फिर क्या किया तुमने?' सबने एक साथ पूछा।

और नाना ने पूरी कहानी सुना डाली। बातें करते-करते सब सेवरवाड़ी आ गए और अपने-अपने घर चले गए। नाना अपने घर पहुँचा। उसने अँधेरे में टटोलकर तुक्या को देखा, तो तुक्या बिस्तर पर नहीं था। नाना को जोर का झटका लगा। उसने पत्नी को जगाकर पूछा,

'तुक्या कहाँ है?'

'होगा बिस्तर पर ही!' पत्नी ने जवाब दिया।

नाना घबरा गया। उसने दरवाज़े पर आकर चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया। मोहल्ले के सारे लोग जाग गए। फिर पूरी सेवरवाड़ी जाग उठी। नाना रोने लगा, उसकी पत्नी छाती पीटने लगी। अचानक शोर-शराबा बढ़ गया। पूरा गाँव कहने लगा, 'अरे, तुक्या कब से गायब है?' 'अरे, कहाँ गया?'

एक बूढ़ा चिल्लाया, 'अरे लड़के को आवाज़ तो दो!'

नाना ने आवाज़ लगाई 'तुक्याऽऽऽऽ–' उसकी गूँजती आवाज़ रात के सन्नाटे को चीरती हुई दूर तक गई। नाना परेशान होकर बैठ गया। 'मेरे पीछे पहले कुत्ता दिखा! फिर इंसान दिखा!! मैंने अँधेरे में पत्थर किसे मारा ! ! !' वह कौन था? नाना के दिमाग में फिर से विचार हथौड़े की तरह चलने लगे।

'नाना, तुझे भूत ने कहाँ पकड़ा था?' एक ने पूछा।

नाना बोला, 'चावर की पगडंडी में।'

'फिर तुमने क्या किया?' दामू मास्टर ने नाना से पूछा।

'मैं पत्थर मारकर भाग निकला,' नाना ने बताया।

'लालटेन और मशालें जलाओ,' मास्टर बोले, 'चलो तुक्या को ढूंढते हैं।'

लोगों ने मशालें और लालटेन जलाईं। और जिस रास्ते से नाना भूत के खेत गया था, उसी रास्ते पर भागते हुए गए।

पगडंडी में तुक्या पड़ा हुआ था। उसका सिर फूट गया था। वह खून से लथपथ पड़ा कराह रहा था। उसे देखकर नाना ने खुद को थप्पड़ मार लिया। मास्टर बोले,

'इसे गाँव की तरफ लेकर भागो, अभी ज़िंदा है।'

तुक्या मरते-मरते बचा और तुक्या की शैतानी की वजह से नाना को जो परेशानी होती थी, उससे नाना को छुटकारा मिल गया। आठ दिनों में तुक्या घूमने-फिरने लायक हो गया, लेकिन

उसने नाना के पीछे-पीछे घूमना बंद कर दिया।

एक दिन नाना ने पूछा,

'भूत गरीब होता है ना?'

'छी, हटो! भूत बहुत बुरा होता है!' तुक्या ने जवाब दिया और नाना हँस पड़ा।

अन्नाभाऊ साठे

मराठी साहित्य के लोकप्रिय लेखक

अनुवाद : डॉ. हसन युनुस पठान

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,

सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय, बेंगलुरु - 27

Email: pathanhasan@sju.edu.in Ph.No. 8050694080